JIWAJI UNIVERSITY

GWALIOR (M.P.)

Class – M.A. (Hindi)
Semester – 2nd
Subject – Hindi
Submitted By:- Dr. Sangeeta Chouhan

गद्य की विधाएं हिन्दी निबंन्ध का विकास :–

हिन्दी की अन्य गद्य विद्याओं केसमान हिन्दी निबन्ध का विकास भी भारतेन्दु युग से प्रारम्भ हुआ है। अस काल में भारतीय समाज मे एक नई चेतना का विकास हो रहा था। पढे–लिखे लोग अपने विचारो को स्वच्छन्दतापूर्वक एक निजीपन लिए हुए ढंग से स्वतंत्र रूप में व्यक्त करने लगे थे। इस समय तक हिन्दी की अनेक पत्र–पत्रिकाऍ प्रकाशित होने लगी थी, जिनमे हिरशचन्द्र चन्द्रिका, उदन्त मार्तण्ड, ब्राहम्ण, प्रदीप, बनारस, अखबार, सार–सुधानिधि आदि महत्वपूर्ण थी। इन समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओ में विविध विषयों पर जो विचार व्यक्त किएजाते थे, उन्हे ही हिन्दी निबन्ध का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है। निबन्ध इन पत्र–पत्रिकाओ से सीधे जुडे हुए थे। लेखको के समक्ष अनेक विषय थे। वे सामयिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक विषयों पर प्राय: निबन्धों के माध्यम से प्रकाश डालते रहते थे। स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि हिन्दी के प्रारम्भिक निबन्ध पत्रकारिता से सीधे जुडे हुए थे।

- भारतेन्दु युग के निबन्धकारो ने साधारण–से–साधारण और गम्भीर–से–गम्भीर विषयों पर निबन्धो की रचना की। सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों पर स्वच्छन्द रूप से विचार व्यक्त करते हुए इन्होने हिन्दी निबन्ध को विकास पथ पर अग्रसर किया। संक्षेप में हिदी निबन्ध के विकास को चार कालो में विभक्त किया जा सकता है:

1. भारतेन्दु युग	(1873 ई. – 1900 ई.)
2. द्विवेदी युग	(1900 ई. – 1920 ई.)
3. शुक्ल युग	(1920 ई. – 1940 ई.)
4. शुक्लोत्तर युग	(1940 ई. के उपरान्त)

1. भारतेन्दु युग (1873 ई. – 1900 ई.)

भारतेन्दु युग को हिन्दी निबन्ध की विकास य़ात्रा का प्रारम्भिक चरण माना जा सकता है। इससे पूर्व के गद्य लेखको की रचनाओ में निबन्ध के गुण उपलब्ध नही थे। सही अर्थो में भारतेन्दु जी के निबन्ध ही हिन्दी के प्राथमिक निबन्ध है, जिनमें निबन्ध कला की मूलभूत विशेषताएँ उपलब्ध होती है। भारतेन्दु जी ने हिन्दी गद्य की अनेक विधाओ का न केवल सूत्रपात ही किया अपितु उन्हे पल्लवित करने का श्रेय भी प्राप्त किया। भारतेन्दुजी के निबन्ध विषय एवं शैली की दृष्टि से विविधतापूर्ण है। उन्होने इतिहास, समाज, धर्म, राजनीति, यात्रा, प्रकृति वर्णन एवं व्यंग्य–विनोद जैसे विषयों पर निबन्धों की रचना की। अपने सामाजिक निबन्धों में उन्होने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किए तो राजनीतिक निबन्धो में अग्रेजी राज्य पर तीखे व्यंग्य किए। भारतेन्दुजी के निबन्धों में विषयानुकूल भाषा– शैली का प्रयोग हुआ है। उनके आलोचनात्मक निबन्धों की भाषा प्रौढ होते हुए भी दुरूह एवं बोझिल नही हो पाई है। भारतेन्दु जी

के कुछ निबन्धों के नाम यहॉदेना अप्रासंगिक न होगा – अग्रेज स्तोत्र, पांचवें पैगम्बर, स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन, लेबी प्राण लेबी, आदि। उनके निबन्धो की भाषा का एक उदाहरण दृष्टव्य है– ‘‘गाडी भी ऐसी टूटी–फूटी जैसे हिन्दुओ की किस्मत और हिम्मता अब तो तपस्या करके गोरी–गोरी, कोख से जन्म लें तब ही संसार में सुख मिले।’’

- भारतेन्दु युग के प्रमुख निबन्धकारो में स्वयं भारतेन्दु बाबू हरिशचन्द्र के अतिरिक्त बालकृष्ण भटट, बदरी नारायण चौधरी ‘प्रेमधन, प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, राधाचरण गोस्वामी, अम्बिकादत्त व्यास आदि उल्लेखनीय हैं। इन निबन्धकरों ने भी हिन्दी निबन्ध के विकास में पर्याप्त योगदान किया है। पं. बालकृष्ण भटट ‘हिन्दी प्रदीप’ के यशस्वी सम्पादक थे और वर्णनात्मक, भावात्मक, विचारोत्तेजनक निबन्धों के लेखक के रूप में जाने जाते थे। हास्य को वे बहुत महत्व देते थे। इसका पता उनके इस विचार से लगता है– ‘‘सच पूछो जो हास्य ही लेख का जीवन है। लेख पढकर कुन्द कली समान दांत

न खिल उठे तो वह लेख ही क्या।'' उनके निबन्ध भावात्मक भी है और विचारात्मक भी 'चन्द्रोदय' उनका भावात्मक निबन्ध है तो 'मुग्ध माधुरी' मे विचार और भवना का सन्तुलित समन्वय दिखाई पडता है। गम्भीर बातो को सरल और सुबोध ढंग से प्रस्तुत कर पाने की कला में वे निष्णात थे। विषय की व्यापकता एवं मोलिकता के साथ–साथ शैली की रोचकता उनके निबन्धों की प्रमुख विशेषता मानी जा सकती है।

- 'ब्राहम्ण' के सम्पादक प. प्रतापनारायण मिश्र इस युग के प्रतिनिधि निबन्धकार थे। वे मनोरंजक एवं व्यंग्य प्रधान निबन्धों को लिखने में अति कुशल थे। भौं, पेट, दांत, नाक आदि पर उन्होने विनोदपूर्ण शैली में निबन्ध लिखे है। कैसा भी विषय क्यों न हो वे उसमें विनोद की सामग्री खेज ही लेते है। मिश्र जी की भाषा मुहावरेदार है जिसमें कहीं– कहीं व्यर्थ की उछलकूद एवं चंचलता भी देखी जा सकती है।

श्री बदरी नारायण चौधर 'प्रेमधन' 'आनन्द कादम्बिनी' नामक मासिक पत्रिका के सम्पादक थे और

भारतेन्दु जी के मित्र थे। उनके निबन्धों की भाषा में आलंकारिकता, कृत्रिमता एवं चमत्कारप्रियता सर्वत्र दिखाई देती है।

- बालमुकुन्द गुप्त ने ‘शिवशम्भू का चिटठा’ नाम से लार्ड कजन को सम्बोधित करते हुए जो निबन्ध लिखे हैं उनमें भारतवासियों की राजनीतिक विविशता का कच्चा चिटठा पेश किया गया है। राधाचरण गोस्वामी ने अनेक निबन्ध सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करने के उद्धेश्य से लिखे। ‘यमपुर की यात्रा’ निबन्ध में वे ‘गोदान’ पर करारा प्रहार करते हुए लिखते हैं– ‘‘यदि गौ की पूंछ पेडकर पार उतर जाते है तो क्या बैल से नहीं उतर सकते? जब बैल से उतर सकते हैं, तो कुत्ते ने क्या चोरी की है?’’
- संक्षे में, भारतेन्दु युग के निबन्धकारों में विषय की व्यापकता एवं विधिता है। वे निबन्ध लेखक होने के साथ–साथ पत्रकार भी हैं अतः उनमें वैयिक्तकता के साथ–साथ सामाजिकता का भी समावेया है। इनकी शैली में हास्य–व्यंग्य एवं मनोरंजन की प्रधानता है। इन निबन्धों का प्रमुख उद्धेश्य राजनीतिक

विषमता और सामाजिक कुरीतियों पर चोट करना रहा है।

- भारतेन्दु युग के निबन्धकारो का मूल्यांकन करते हुए डॉ. राम विलास शर्मा ने लिखा है– “जितनी सफलता भारतेन्दु युग के लेखकों को निबन्ध रचना में मिली उतनी कविता और नाटक मे भी नही मिली।.......... भारतेन्दु युग की गद्य शौली के सबसे चमत्कारपूर्ण निदर्शन निबन्धों में ही मिलते है।” बाबम गुलाबराय के अनुसार, “निबन्ध की पृष्ठीभूमि मे रहने वाला निजीपन, हृदयोल्लास औा चलतेपन के लिए भारतेन्दु युग चिरस्मरणीय रहेगा” भारतेन्दु युग के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार स्वयं भारतेन्दु जीही माने जा सकते है।